



पेरिस में बिक तक का सफ़र

मैंने अपने सफ़र का इंतज़ाम कर लिया था और शनेल को बता दिया था कि मैं तीन हफ़्ते में पेरिस पहुँचूँगा।

इस इकलौती जानकारी के लेन-देन के अलावा वह संयमी और कम बोलने वाली ही रही, एक ठेठ फ़्रांसीसी औरत। उसने और कुछ नहीं पूछा।

मेरी ख़ानगी के समय के पीछे एक बहुत सटीक तर्क था।

मुझे 351 यूरो की अपनी मासिक पेंशन मिलनी थी, और उसी पैसे से मैं निकल सकता था। असली सवाल यह नहीं था कि मैं जा सकता हूँ या नहीं, बल्कि यह कि कैसे।

मैंने अपने एक दोस्त को फ़ोन किया जो नियमित रूप से अंतरराष्ट्रीय ट्रक चलाता था, और तय हुआ कि वह मुझे साथ ले चलेगा।

पर हाँ कहने से पहले मुझे जानना था कि वह क्या ढो रहा है। अगर ट्रेलर में मवेशी लदे होते, तो मुझे बदबू झेलनी पड़ती।

माँ जिलेट अपने बच्चों के साथ एक बात पर कभी नरम नहीं पड़ती थी: समस्या कभी दिमाग़ के भीतर नहीं होती; वह सिर्फ़ उन कामों में होती है जो हल पैदा करते हैं।

ठहरने के लिए मैंने शहर से ज़रा बाहर एक साझा कमरा ढूँढ़ लिया था। उसका किराया बारह यूरो रोज़ था।

वह जगह मेट्रो लाइन के आखिरी स्टेशन के पास थी, और शहर तक आने-जाने का ख़र्च रोज़ के सिर्फ़ तीन यूरो पड़ने वाला था।

मेरा ठहरना तीन दिन से ज़्यादा नहीं चलना था, मज़ी से नहीं बल्कि योजना से।

जब तक मेरा ट्रक-ड्राइवर दोस्त ब्रसेल्स में अपनी डिलीवरी पूरी करता, तब तक मुझे वापसी के सफ़र के लिए तैयार हो जाना था, और इस बार मुझे इसकी फ़िक्र नहीं करनी थी कि वह क्या ढो रहा है।

आख़िरकार ख़ानगी का दिन आ गया।

रात के दो बजे, मेरी पत्नी ने पूछा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।

उसने मुझे वहाँ ट्रॉली सूटकेस के साथ खड़ा देखा, मामूली कपड़ों में।

मैंने उसे बताया कि मुझे नौकरी से जुड़ी एक मीटिंग में जाने का मौक़ा मिला है, हालाँकि मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था कि मुझे कौन-सी भूमिका दी जा सकती है।

मेरा अंदाज़ा था कि मेरी योग्यताओं को देखते हुए, मिल सकने वाला सबसे ऊँचा पद शायद गोदाम के मज़दूर का होगा।

मैं कुछ नहीं चुनूँगा। पसंद आया तो बस स्वीकार कर लूँगा।

एउजेनियो ने ट्रक उस सड़क के मुहाने पर खड़ा किया था जो मेरे घर की ओर जाती है।

उस तक पहुँचते ही मेरी पहली फ़िक्र यह पता लगाना थी कि वह क्या ढो रहा है।

आप यकीन नहीं करेंगे। ट्रेलर में प्लास्टिक लदा था, जो बिक बेल्जियम जा रहा था, जहाँ उससे पेन बनाए जाने थे।

हाहाहाहा।

रेज्जो कालाब्रिया से पेरिस तक के बत्तीस घंटे के सफ़र में हम सिर्फ़ ईंधन, खाने और शौचालय के लिए हाइवे के सर्विस स्टेशनों पर रुके।

इस बीच, एउजेनियो टैकोग्राफ़ के कागज़ात बदलता रहा। हर बार जब वह ऐसा करता, कागज़ों पर किसी दूसरे ड्राइवर का नाम आ जाता। स्टीयरिंग पर हमेशा एउजेनियो ही था। फिर भी सिस्टम में छह अलग-अलग ड्राइवर दर्ज थे।

बस इतना ही यह समझने के लिए काफ़ी था कि मैं एक ऐसे सिस्टम के भीतर था जो ठीक से काम नहीं करता था, और ख़र्च घटाने का लोगों को यही इकलौता हल मिला था।

आख़िरकार हम पेरिस के बाहरी इलाक़े में पहुँचे।

एउजेनियो ने मुझे एक मेट्रो स्टेशन के पास उतार दिया, वही स्टेशन जो मुझे घर लौटने के वक़्त फिर ढूँढना था।

उसने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।

मैंने जवाब दिया: “मैं कुछ औरतों से मिलने जा रहा हूँ।”

उसने मेरी तरफ़ देखा और कहा: “सेक्स की ताक़त।”

फर्दिनांदो